शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 48 वां वर्ष

ई-पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 48 अंक-6 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 6-13 फरवरी 2023 मूल्य पांच रूपए

प्रदेश को श्रीलंका जैसे कगार पर पहुंचाने के लिए जिम्मेदार कौन?

- शान्ता धूमल के ब्यानों से उभरी नई चर्चा
- शान्ता काल में शून्य था प्रदेश का कर्ज
- धूमल काल में लिया गया केवल 6646 करोड़ का कर्ज
- फिर 75000 करोड़ के लिए कौन जिम्मेदार
- यह कर्ज कहां निवेशित हुआ जानने का जनता को पूरा हक

शिमला/शैल। हिमाचल के हालात श्रीलंका जैसे हो सकते हैं यह आशंका व्यक्त की है मुख्यमंत्री सुखविन्दर सिंह सुक्खू ने। मुख्यमंत्री ने यह आशंका व्यक्त करते हुये प्रदेश के कर्ज भार का आंकड़ा 75000 करोड़ और कर्मचारियों के वेतन पैन्शन का बकाया जिसकी अदायगी पूर्व सरकार नहीं कर पायी है वह 11000 करोड़ विरासत में मिलने का भी खुलासा जनता के सामने रखा है। यही नहीं पूर्व सरकार पर वित्तीय कुप्रबंधन का

भी गंभीर आरोप लगाया है। मुख्यमंत्री के इस खुलासे से प्रदेश की राजनीति एक बार फिर गरमा गयी है। पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर से लेकर नीचे तक सभी भाजपा नेताओं ने इस पर कड़ी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हुये कहा है कि यदि ऐसा होता है तो इसकी पूरी जिम्मेदारी कांग्रेस सरकार की होगी। लेकिन यह प्रतिक्रिया देते हुये प्रदेश की माली हालत और बढ़ते कर्ज पर कोई टिप्पणी नहीं की है। जबकि धर्मशाला में हुये विधानसभा के पहले सत्र में प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर हुई खुली चर्चा के बाद पूर्व सरकार पर सबसे ज्यादा कर्ज लेने का तमगा लगा है।

अब मुख्यमंत्री सुखविन्दर सिंह सुक्खू की टिप्पणी के बाद पूर्व मुख्यमंत्री शान्ता कुमार और प्रेम कुमार धूमल के ब्यान भी आये हैं। शान्ता कुमार ने दावा किया है कि वह प्रदेश पर शून्य कर्ज छोड़ कर गये हैं। प्रो. धूमल ने भी स्पष्ट कहा है कि उनके कार्यकाल में केवल 6646 करोड़ का कर्ज लिया गया है। स्मरणीय है कि शान्ता कुमार 1977 और फरवरी 1990 में दो बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। भले ही वह दोनों बार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये हैं। लेकिन वित्तीय अनुशासन के लिये जाने जाते हैं। उन्हीं के कार्यकाल ने जो काम न करें उसे वेतन नहीं की नीति लायी गई थी। धूमल 1998 और फिर 2007 में दो बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे हैं। अपने पहले ही कार्यकाल में उन्होंने विधानसभा के पटल पर प्रदेश की वित्तीय स्थिति को लेकर श्वेत पत्र रखा था। जो बाद में आये मुख्यमंत्री नहीं रख पाये हैं। अब इन पूर्व मुख्यमंत्रियों के बयानों से स्पष्ट हो जाता है कि प्रदेश के इस इतने बड़े कर्ज भार के लिये या तो पूर्व मुख्यमंत्री स्व. वीरभद्र सिंह या फिर भाजपा के जयराम ही इस कर्ज भार के लिये जिम्मेदार है। वीरभद्र सिंह आज मौजूद नहीं है इसलिये उनकी ओर से कोई भी जवाब कांग्रेस के वर्तमान नेतृत्व की ओर से ही आना है। जयराम सरकार इस कर्ज भार पर कुछ कह नहीं पा रही हैं। लेकिन सुक्खू के ब्यान ने कांग्रेस और भाजपा दोनों दलों के भीतर एक चर्चा अवश्य छेड़ दी है।

सुक्खू सरकार को सत्ता संभाले अभी दो माह का ही समय हुआ है। वित्तीय वर्ष का अन्त 31 मार्च को होना है। इसलिये चालू वित्त वर्ष के खर्चे चालू बजट के प्रावधानों से ही पूरे होते हैं। लेकिन सुक्खू सरकार को वर्ष समाप्त होने से पहले ही दिसम्बर, जनवरी और फरवरी में चार हजार करोड़ का कर्ज लेना पड़ गया है। संभव है कि मार्च में भी कर्ज लेना पड़े। सुक्खू सरकार द्वारा यह कर्ज लेने का अर्थ है कि उसे विरासत में सरकारी कोष खाली मिला है। इसी कारण से इस सरकार को डीजल पर वैट बढ़ाना पड़ा है। नगर निगम क्षेत्रों में पानी के दाम बढ़ाने पड़े हैं। अब बिजली के रेट बढ़ाने की बारी आ गयी है। यह एक गंभीर स्थिति है जिसका अर्थ होगा कि अगले वर्ष अन्य सेवाओं की दरों में भी बढ़ौतरी होगी। क्योंकि अब तक आयी कैग रिपोर्ट से स्पष्ट हो जाता है कि केन्द्र द्वारा राज्य को जी.एस.टी. की प्रतिपूर्ति भी कुछ समय से नहीं हो रही है। सौ योजनाओं पर जयराम सरकार एक पैसा भी नहीं खर्च कर पायी है। स्कूलों में बच्चों को वर्दियां नहीं दी जा सकी हैं। कई केन्द्रीय योजनाओं और अन्य के लिये केन्द्र से कोई आर्थिक सहयोग नहीं मिल पाया है यह एक रिपोर्ट का खुलासा है। प्रधानमन्त्री ग्रामीण सड़क योजना में अभी भी दो सौ से अधिक सड़कें अधूरी पड़ी हुई हैं और योजना बन्द हो चुकी है। पूर्व मुख्यमन्त्री के विधानसभा क्षेत्र सिराज में बने हेलीपैड उसी समय कांग्रेस के निशाने पर रह चुके हैं। मुख्यमन्त्री के कार्यकाल में दो मंजिला भवन ओकओवर में लगायी गयी लिफ्ट के औचित्य पर जनता सवाल उठा चुकी है। उप मुख्यमन्त्री मुकेश अग्निहोत्री बतौर नेता प्रतिपक्ष तब प्रदेश की स्थिति पर श्वेत पत्र जारी किये जाने की मांग कर चुके हैं जो आज कांग्रेस की सरकार आने पर भी जारी नहीं हो सका है।

आज जिस तरह से अदानी प्रकरण सामने आया है और इस पर उठते सवालों से केन्द्र सरकार और प्रधानमन्त्री भाग रहे हैं उसका असर देश की आर्थिक स्थिति पर पड़ना निश्चित है। केन्द्रीय बजट में प्राइवेट क्षेत्र से जिस निवेश की उम्मीद की गयी है उसका लक्ष्य पूरा होना संदिग्ध हो गया है। राज्यों तक इसका सीधा असर पड़ेगा। प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी 2024 के लोकसभा चुनाव के परिदृश्य में सारी बहस का रुख बदलने का प्रयास कर रहे हैं। इसी प्रयास की दिशा में केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रदेश की सुक्खू सरकार द्वारा डीजल पर वैट बढ़ाये जाने का तंज कसा है। राजस्थान के मुख्यमन्त्री अशोक गहलोत द्वारा नये वर्ष का बजट पेश करते हुये पिछले ही बजट का वक्तव्य सदन में पढ़ने को भी निशाना बनाया गया है। निश्चित है कि केन्द्र अगले चुनावों के परिदृश्य में गैर भाजपा सरकारों को हर ओर से घेरने और अस्थिर करने का प्रयास करेगा। वित्तीय स्थिति इस संद्धर्भ में

सबसे आसान मुद्दा हो जाता है प्रदेश

सरकार पर हमला करने का। अभी

जिस तर्ज में शान्ता और धूमल के ब्यान आये हैं विश्लेषक इन्हें इसी प्रसंग में देख रहे हैं। बल्कि एकदम एक साथ तेरह राज्यों के राज्यपालों का बदला जाना भी इसी कड़ी में देखा जा रहा है। वित्तीय स्थिति के परिदृश्य में सुक्खू सरकार के सारे फैसलों पर जनता पैनी नजर रख रही है और इनका आने वाले चुनावों पर असर पड़ना तय है। ऐसे में सुक्खू सरकार शान्ता और धूमल के ब्यानों पर क्या प्रतिक्रिया लेकर आती है इस पर सबकी निगाहें लगी हुई हैं क्योंकि शान्ता काल में भी कुछ ऐसे फैसले हुये हैं जिनका आगे चलकर प्रदेश की आर्थिकी पर निश्चित रूप से नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

उप-मुख्यमंत्री ने फिन्ना सिंह परियोजना के लिए 340 करोड़ रुपये की शेष राशि जारी करने का आग्रह किया

शिमला/शैल। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने नई दिल्ली में केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह

शेखावत से भेंट की। उन्होंने केन्द्रीय मंत्री से हिमाचल में प्रभावी एवं दीर्घकालिक सिंचाई नेटवर्क के लिए समुचित बजट प्रावधान करने का आग्रह किया ताकि राज्य में कृषि क्षेत्र को और बढ़ावा दिया जा सके।

उन्होंने केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि राज्य का एक बड़ा क्षेत्र अभी भी सिंचाई सुविधा से वंचित है और ऐसे में प्रदेश में सिंचाई नेटवर्क को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। उन्होंने ट्यूबवेल निर्माण के लिए विशेष बजट आबंटित करने का भी आग्रह किया।

उन्होंने केन्द्रीय मंत्री के समक्ष पौंग तथा भाखड़ा ब्यास प्रबन्धन बोर्ड के जलाशयों से निकासी संबंधित मामला भी उठाया। उन्होंने कहा कि राज्य में पेयजल आपूर्ति क्षेत्र के लिये लगभग 1200 करोड़ रुपये की आवश्यकता है।

मुकेश अग्निहोत्री ने हिमाचल प्रदेश के प्रति उदार रुख अपनाने तथा जल जीवन मिशन के अन्तर्गत राज्य को 336 करोड़ रुपये की किश्त जारी करने के लिए केन्द्रीय मंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने फिन्ना सिंह परियोजना के लिए शेष 340 करोड़ रुपये की राशि शीघ्र जारी करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस परियोजना का कार्य प्रगति पर है और अभी तक इस पर 286 करोड़ रुपये व्यय किए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि फिन्ना सिंह मध्यम सिचाई परियोजना वर्ष 2011 में 204 करोड़ रुपये की आरम्भिक लागत के साथ शुरू की गयी थी, जो अब बढ़कर 646 करोड़ रुपये हो गयी है।

उप-मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में प्रभावी एवं दीर्घकालिक सिंचाई नेटवर्क सुनिश्चित करने के लिए कार्य योजना प्रक्रियाधीन है। उन्होंने कहा कि कार्य योजना पर चर्चा तथा वर्तमान की आवश्यकताओं एवं विभिन्न स्तरों पर पेश आ रही समस्याओं के हल के लिए जल शक्ति मंत्रालय और राज्य के जल शक्ति विभाग के अधिकारियों की एक संयुक्त बैठक भी प्रस्तावित है।

उन्होंने राज्य में निर्माणाधीन और अन्य प्रस्तावित मल निकासी योजनाओं के लिए बजट प्रावधान करने का भी आग्रह किया ताकि इन्हें समयबद्ध पूर्ण किया जा सके। उप-मुख्यमंत्री ने 75 करोड़ रुपये की महत्वकांक्षी बीत सिचाई परियोजना का मुद्दा भी केन्द्रीय मंत्री के समक्ष उठाया और इसे शीघ्र स्वीकृति प्रदान करने का आग्रह किया।

इससे पूर्व, उप-मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय मंत्री को सम्मानित किया और हिमाचल आने का न्यौता भी दिया।

मुख्यमंत्री व उप-मुख्यमंत्री ने नवनियुक्त राज्यपाल को बधाई दी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री

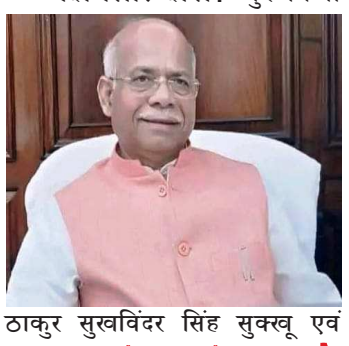

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू एवं उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने शिव प्रताप शुक्ला को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किये जाने पर बधाई दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनसेवा में शिव प्रताप शुक्ला के लम्बे अनुभव का प्रदेश व यहां की जनता को लाभ मिलेगा।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने भी नव-नियुक्त राज्यपाल को बधाई दी है।

जरुरतमंद एवं कमजोर लोगों का संबल बनीं प्रदेश सरकार की कल्याणकारी योजनाएं

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने प्रदेश की बागडोर संभालने के साथ ही यह स्पष्ट कर दिया था कि पूरा प्रदेश एक कुटुंब के समान है और हिमाचल को देश का विकसित राज्य बनाने के ध्येय को हासिल करने के लिए प्रदेश सरकार कटिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने अपने निर्णयों से यह साबित किया है कि सुख की सरकार निराश्रित महिलाओं, बच्चों और समाज के कमजोर वर्गों की माता-पिता है। ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू सत्तासीन होने के पहले दिन से ही समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान की दिशा में कार्य कर रहे हैं। अनाथ बच्चों की देख-भाल के लिए आयु को बढ़ाकर 27 वर्ष करने का निर्णय भी इस दिशा में किया गया सार्थक प्रयास है।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अनाथ बच्चों को घर निर्मित करने के लिए चार बिस्वा भूमि प्रदान करने का भी निर्णय लिया है। प्रदेश सरकार उनकी उच्च शिक्षा का व्यय भी वहन करेगी। सरकार के यह निर्णय जरूरतमंद और कमजोर लोगों को सहारा प्रदान करने में दूरगामी भूमिका निभाएंगे।

हंसराज कॉलेज दिल्ली में प्राक्तन छात्र व्याख्यान श्रृंखला में मुख्यातिथि के रूप में शामिल हुये विक्रमादित्य सिंह

शिमला/शैल। लोक निर्माण, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज

कॉलेज के 75वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित प्राक्तन छात्र व्याख्यान श्रृंखला में मुख्यातिथि के रूप में भाग लिया। इस पंचम व्याख्यान का विषय 'भारतीय राजनीति में युवाओं का वर्तमान एवं भविष्य' रखा गया था।

इस अवसर पर विक्रमादित्य सिंह ने कहा कि इस संस्थान के साथ उनका गहरा जुड़ाव रहा है। उन्होंने कहा कि स्नातक स्तर की शिक्षा उन्होंने इसी संस्थान से ग्रहण की है। उन्होंने कहा कि युवा ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण में उनका बहुमूल्य सहयोग लिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार हिमाचल के युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए कई नवीन कदम उठा रही है। शिक्षा के साथ-साथ उन्हें खेलों के क्षेत्र में भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

व्याख्यान श्रृंखला के दौरान विभिन्न वक्ताओं ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता हंसराज कॉलेज की प्राचार्य प्रोफेसर रमा ने की। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड कॉमर्स की सहायक प्रोफेसर डॉ. दीप्ती तनेजा तथा प्राक्तन छात्र संघ के उपाध्यक्ष डॉ. नितिन मलिक विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

व्याख्यान श्रृंखला का संयोजन डॉ.चेतना जैन और डॉ.शैलू सिंह तथा प्राक्तन छात्र संघ की ओर से डॉ. प्रभांशु ओझा और महेन्द्र गोयल ने किया।

हिमाचल में निवेश आकर्षित करने के लिए भूमि का निरीक्षण

शिमला/शैल। कांगड़ा जिले को पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी, आईटीईएस और आयुष कल्याण के क्षेत्र में प्रमुख केन्द्र (हब) बनाने की मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की सोच को मूर्तरूप प्रदान करने की

दिशा में उद्योग विभाग ने कार्य आरंभ कर दिया है। उद्योग और आयुष मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने इस बारे में उद्योग विभाग को राजस्व अधिकारियों के साथ चिन्हित स्थानों पर संयुक्त निरीक्षण करने के निर्देश दिये हैं ताकि इन क्षेत्रों में अधिक से अधिक निवेश आकर्षित किया जा सके।

उद्योग विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि इन निर्देशों के उपरांत उद्योग विभाग द्वारा राजस्व अधिकारियों के साथ जिला कांगड़ा की धर्मशाला, बड़ोह, नगरोटा बगवां और शाहपुर तहसील में संयुक्त निरीक्षण किया गया।

इस संयुक्त निरीक्षण टीम में उद्योग विभाग के निदेशक राकेश प्रजापति, अतिरिक्त निदेशक तिलक राज शर्मा, उपमण्डलाधिकारी (ना.) शाहपुर एम. एल. शर्मा, उपमण्डलाधिकारी (ना.) धर्मशाला शिल्पी बेक्टा, जिला उद्योग केन्द्र कांगड़ा के महाप्रबन्धक राजेश कुमार, प्रोजेक्ट लीड, ई.वाई., सुमित सागर डोगरा शामिल थे। संयुक्त निरीक्षण टीम द्वारा मुहाल क्योरियां, तहसील शाहपुर में चरागाह बिला दरख्तान (71 कनाल), मुहाल जुहल, तहसील धर्मशाला में जंगल मेहफुजा/मेहदुदा (19 हेक्टेयर), मुहाल चंदरोट और तहसील बड़ोह में, चरागाह बिला दरख्तान (95 कनाल) सरकारी भूमि का निरीक्षण किया गया। इसके अलावा टीम ने मुहाल गुजरेहड़ा, तहसील धर्मशाला में 'बंजर कादिम/खड़ेतर (250 कनाल) निजी भूमि का निरीक्षण भी किया।

ग्रामीण अर्थ–व्यवस्था को मजबूत करने लिए प्रतिबद्ध सुक्खू सरकार

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है, क्योंकि प्रदेश की लगभग 90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। इन क्षेत्रों के लिए बेहतर अधोसंरचना निर्मित करने तथा ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को मजबूत करने के लिए प्रदेश सरकार ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र के लिए एक हजार करोड़ रुपये का प्रावधान करने का निर्णय लिया है।

ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का मुख्य स्रोत पशुपालन है। प्रदेश सरकार पशु पालकों से 80 रुपये प्रति लीटर गाय का दूध और 100 रुपये की दर से भैंस का दूध खरीदेगी। प्रदेश सरकार के इस निर्णय से राज्य के किसानों को प्रतिमाह 24 से 30 हजार रुपये तक की आमदनी होगी। इससे न केवल किसान पशु पालन अपनाने के लिए प्रेरित होंगे बल्कि प्रदेश के युवाओं के लिए स्वरोजगार के बेहतर अवसर भी प्राप्त होंगे।

पशु पालकों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से प्रदेश सरकार दो रुपये प्रति किलोग्राम की दर से गाय का गोबर खरीदने पर विचार कर रही है। इससे किसानों की आर्थिकी सुदृढ़ होगी और लोग प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। मुख्यमंत्री के इन निर्णयों ने यह सिद्ध किया है कि वर्तमान प्रदेश सरकार सत्ता के लिए नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन के ध्येय के साथ कार्य कर रही है। इसके लिए प्रदेश के लोगों की सक्रिय भागीदारी भी अपेक्षित है। प्रदेशवासियों की सक्रिय भागीदारी और सहयोग से ही प्रदेश की आर्थिक स्थिति को पुनः पटरी पर लाया जा सकता है।

शैल समाचार
संपादक मण्डल
संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादक:जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा
अन्य सहयोगी
राजेश ठाकुर
अंजना

मुख्यमंत्री व उप-मुख्यमंत्री ने आगजनी से बच्चों के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने ऊना जिला के अम्ब उपमण्डल के बणे दी हट्टी में हुई आगजनी की घटना में चार बच्चों के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

अपने शोक सन्देश में मुख्यमंत्री ने कहा कि आगजनी में चार बच्चों की मृत्यु अत्यन्त दुःखद घटना है। उन्होंने जिला प्रशासन को पीड़ित परिवारों को तत्काल हर संभव सहायता प्रदान करने के निर्देश दिए हैं।

मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा परिजनों को इस अपूर्णीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

उप-मुख्यमंत्री ने शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

पर्यटन को बढ़ावा देने में परस्पर सहयोग करेंगे हिमाचल व गोवा

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश और गोवा पर्यटन और निवेश जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए परस्पर सहयोग से कार्य करेंगे और घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विशेष पैकेज भी तैयार किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत के मध्य गोवा में आयोजित बैठक में इस पर चर्चा की गयी।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने संयुक्त रणनीति पर विशेष बल देते हुए कहा कि हिमाचल और गोवा देश के प्रमुख पर्यटन राज्य हैं और दोनों ही राज्यों में विश्व के अद्भुत संयुक्त पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित होने की अभूतपूर्व संभावनाएं हैं। इससे लोगों को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध होने के साथ-साथ आर्थिकी को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि दोनों राज्यों के पर्यटन गंतव्यों को आपस में जोड़ने वाले पर्यटक केंद्रित वृहद् पैकेज तैयार करने की आवश्यकता है ताकि दोनों ही राज्यों में घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या में और बढ़ोतरी की जा सके।

उन्होंने कहा कि दोनों राज्य मिलकर पर्यटन और व्यापार के क्षेत्रों में एक विशेष प्रणाली तैयार कर सकते हैं। ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू और डॉ. प्रमोद सावंत ने समुद्र तथा पर्वतों के पारिस्थितिकीय तंत्र (इको सिस्टम) के बारे में आपसी समझ और बेहतर करने के दृष्टिगत दोनों राज्यों के छात्रों के लिए समुद्र-पर्वत विषय पर आधारित विज्ञान कार्यशालाओं तथा छात्र विनिमय कार्यक्रमों की शृंखला आरंभ करने पर भी चर्चा की।

राधा-कृष्ण मंदिर में आयोजित धार्मिक समागम में शामिल हुए मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कोटला कलां राधा-कृष्ण मंदिर में आयोजित धार्मिक समागम में भाग लिया और बाबा बाल का आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर पहुंचने पर ढोल-नगाड़ों के साथ मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 3.35 करोड़ रुपये की लागत से लालसिंगी (बाबा बेली राम) से लेकर झलेड़ा तक बनने वाली सड़क का भूमि पूजन भी किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ऊना संतों की धरती है और यहां आकर उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हुई है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार श्रीमद्भगवद्गीता की शिक्षाओं पर अपनी कर्मनीति बनाकर आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि राधा-कृष्ण मंदिर आकर उन्हें आध्यात्मिक अनुभूति हो रही है और वह यहां से सेवा का आशीर्वाद लेकर जाना चाहते हैं।

इससे पहले, उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने ऊना पहुंचने पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मंदिर में धार्मिक समागम की इस उत्तम घड़ी में उन्हें संतों से आशीर्वाद लेने का अवसर प्राप्त हुआ है।

जन कल्याणकारी योजनाओं के प्रभावी प्रचार-प्रसार में नवीनतम माध्यमों का करें प्रयोगः संजय अवस्थी

शिमला/शैल। मुख्य संसदीय सचिव, सूचना एवं जन संपर्क संजय अवस्थी ने नवीनतम और आधुनिक मीडिया का उपयोग कर लोगों तक पहुंचने पर बल दिया। वे निदेशालय में विभाग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मीडिया के माध्यम से सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक ले जाने में जन संपर्क की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिससे जन कल्याण के लिए सरकार के प्रति लोगों की धारणा को बदलने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि यह विभाग सरकार और लोगों के बीच एक मजबूत और सकारात्मक संबंध स्थापित करने में सहायक है।

उन्होंने कहा कि जन संपर्क हमेशा दोतरफा होता है तथा लोगों और सरकार के मध्य एक सेतु का काम करता है। उन्होंने कहा कि जनता की आवश्यक प्रतिक्रिया के माध्यम से सरकार की विभिन्न योजनाओं और नीतियों को बनाने, संशोधित करने या सुधारने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उन्होंने कहा कि व्यापक प्रभाव के लिए मीडिया को त्वरित सूचना प्रदान करने पर विभाग को अधिक ध्यान देना चाहिए। मुख्य संसदीय सचिव ने विभाग को मजबूत करने के सुझावों का स्वागत करते हुए कहा कि विभाग से जुड़ी मांगों को जल्द से जल्द पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

इससे पूर्व निदेशक सूचना एवं जनसंपर्क किरण भड़ाना ने संजय अवस्थी का सम्मान एवं स्वागत किया। उन्होंने मुख्य संसदीय सचिव को अपना बहुमूल्य समय देकर मार्गदर्शन करने के लिए आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री ने हारमनी ऑफ द पाइन्ज़ को बधाई दी

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने दादा साहेब फाल्के अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल अवार्ड समारोह में प्रस्तुति के लिए चयनित होने पर हिमाचल प्रदेश पुलिस ऑर्केस्ट्रा बैंड हारमनी ऑफ द पाइन्ज़ को बधाई दी है। हिमाचल प्रदेश पुलिस ऑर्केस्ट्रा बैंड के एक दल ने मुख्यमंत्री से भेंट की और उन्हें इस उपलब्धि से अवगत करवाया। दल में पुलिस महानिरीक्षक (प्रशासन) डी.के. यादव, अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक (मुख्यालय) कार्तिकेयन गोकुलचंद्रन और बैंड के मुख्य निरीक्षक विजय कुमार शामिल थे।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल पुलिस और हारमनी ऑफ द पाइन्ज़ बैंड दल के सदस्यों को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

मुख्यमंत्री ने नादौन और हमीरपुर विधानसभा क्षेत्र की विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने हमीरपुर जिले के नादौन क्षेत्र के सेरा विश्राम गृह में जिला के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ नादौन और हमीरपुर विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को इन परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के दिशा-निर्देश जारी किए।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को परियोजनाओं से संबंधित सभी प्रक्रियाओं को शीघ्र पूरा करने के निर्देश देते हुए कहा कि इनमें अनावश्यक विलम्ब नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी विकासात्मक परियोजनाओं के कार्य निर्धारित अवधि में पूरे हो जाने चाहिए ताकि लोग इनसे लाभान्वित हो सकें। इस अवसर पर उपायुक्त देबश्वेता बनिक ने मुख्यमंत्री को दोनों विधानसभा क्षेत्रों की विभिन्न परियोजनाओं के बारे में अवगत करवाया। हमीरपुर जिला तथा अन्य क्षेत्रों से आये सैकड़ों लोगों ने मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू से भेंट की तथा उन्हें बधाई दी। मुख्यमंत्री ने सभी का अभिवादन स्वीकार किया तथा उनकी समस्याएं भी सुनीं। इससे पहले मुख्यमंत्री ने विश्राम गृह परिसर में कपूर का पौधा भी रोपित किया।

तृतीय भारतीय आरक्षित वाहिनी पण्डोह द्वारा 17वां स्थापना दिवस पर भव्य परेड का आयोजन

शिमला/शैल। हर वर्ष की भान्ति, तृतीय भारतीय आरक्षित वाहिनी, पण्डोह द्वारा इस वर्ष भी वाहिनी का 17वां स्थापना दिवस वाहिनी परिक्षेत्र में धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में मधुसूदन शर्मा, उप-पुलिस महानिरीक्षक,मध्य खण्ड, जिला मण्डी ने मुख्य अतिथि के रुप में शिरकत की तथा भव्य परेड की सलामी ली। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक मण्डी शालिनी अग्निहोत्री, सुशांत उप पुलिस अधीक्षक राज्य गुप्तचर विभाग ईकाई मण्डी तथा विशेष रुप से ओ. सी. ठाकुर, सेवानिवृत पुलिस महानिरीक्षक, डी.पी. शर्मा, सेवानिवृत पुलिस महानिरीक्षक व जोगराज जरयाल, सेवानिवृत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक तथा वाहिनी के अन्य राजपत्रित अधिकारीगण व कर्मचारीगण तथा अन्य विभागों से आये विशिष्ट अतिथि गण भी उपस्थित थे।

सामारोह के दौरान भगत सिंह ठाकुर, समादेशक, तृतीय भारत आरक्षित वाहिनी ने वाहिनी की प्रशासनिक रिपोर्ट सभी कर्मचारियों व गणमान्य व्यक्तियों के समक्ष रखी। इस मौके पर वाहिनी के कर्मचारियों के द्वारा एक भव्य परेड का आयोजन भी किया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम, बालीबाल मैच व वाहिनी की त्वरित प्रकिया दल (QRT) द्वारा VIP सुरक्षा के सन्दर्भ में प्रयोग में लायी जाने वाली प्रकिया का प्रदर्शन भी किया गया। इस मौके पर राज्य आपदा एवं प्रतिक्रिया बल ईकाई मण्डी स्थित पण्डोह के द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस के अतिरिक्त इस मौके पर जिला चिकित्सालय मण्डी के सहयोग से वाहिनी मे ं एक रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया जिसमें वाहिनी के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। मुख्य अतिथि महोदय ने वाहिनी के कर्मचारियों, जिन्होनें विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया है, जिनमें विभागीय कोर्स तथा खेलकूद प्रतिस्पर्धाएं शामिल हैं, को प्रोत्साहित किया व साथ ही भविष्य में सभी कर्मचारियों को अपने कार्यों में उत्कृष्टता, कर्तव्यनिष्ठा बनाये रखने हेतू अपनी शुभकामनाएं दी। उन्होनें पुलिस महानिदेशक हिमाचल प्रदेश पुलिस संजय कुंडू जी के द्वारा इस मौके पर दिया गया शुभ सन्देश भी जवानों को पढ़ कर सुनाया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 की आबकारी नीति के प्रबंधन के लिए बैठक आयोजित

शिमला/शैल। राज्य कर एवं आबकारी विभाग द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 की आबकारी नीति के प्रबंधन के लिए प्रधान सचिव, राज्य कर एवं आबकारी, भरत खेड़ा की अध्यक्षता में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये आबकारी लाइसेंसियों के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया।

बैठक में भरत खेड़ा ने प्रदेश के राजस्व को बढ़ाने एवं विभाग द्वारा नीति अनुसार व्यापार संचालन पर बल दिया। प्रत्येक जिला से आये आबकारी लाइसेंसियों ने अपने-अपने सुझाव दिये। इसके अतिरिक्त, प्रदेश में स्थित आसवनी एवं बोतलीकरण सयंत्रों द्वारा भी सुझाव प्रस्तुत किये गये।

अवैध शराब की तस्करी पर रोक लगाने के लिए विशेष टीमों का गठन कर सीमावर्ती इलाकों मे तैनात करने पर भी बैठक में चर्चा की गयी। सभी लाईसेंसियों ने इस बारे में विभाग को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

आयुक्त, राज्य कर एवं आबकारी, यूनुस ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

जीवन में संबंध होना बहुत जरूरी है। पर उससे भी जरूरी है उन संबंधों में जीवन होना।
.....स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

अदानी पर उठते सवालों से कब तक बचेगी सरकार और प्रधानमंत्री

क्या लोकतंत्र को सही में खतरा पैदा हो गया है? क्या विपक्ष को संसद में भी सरकार से तीखे सवाल पूछने का अधिकार नहीं है? क्या विपक्ष के सवालों का जवाब देने के बजाय उन्हें संसद की कार्यवाही से ही निकाल दिया जायेगा? क्या देश की सारी व्यवस्था एक कारपोरेट घराने के गिर्द ही सिमट कर रह गयी है? क्या इन सवालों को एक लम्बे समय तक टाला जा सकता है? क्या देश एक ही आदमी के ''मन की बात'' के गिर्द घूमने को बाध्य किया जा रहा है? यह सवाल और ऐसे अनेकों सवाल अदानी प्रकरण के बाद खड़े हो गये हैं। क्योंकि जो कारपोरेट घराना कुछ ही वर्ष पहले विश्व के अमीरों की सूची में 609 स्थान पर था वह जब एक दशक से भी कम समय में देश का सबसे अमीर और विश्व का दूसरा रईस बन जाये तो निश्चित है कि वह सबकी जिज्ञासा का विषय तो बनेगा ही। ''महाजनो येन गत: स पन्था:'' का अनुसरण करते हुए हर व्यक्ति उसके पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करेगा ही। क्योंकि इस घराने का दखल उद्योग के हर क्षेत्र में हो गया। सरकार की नीतियां इसी के अनुकूल होती चली गयी। करोना महामारी के दौरान भी ''आपदा को इसी ने अवसर'' बनाया। देश के हर राज्य में ही नहीं विश्व के दूसरे देशों में भी इसका प्रसार होता चला गया। सता का इसे पूरा सहयोग मिल रहा है यह प्रधानमंत्री की इससे सार्वजनिक नजदीकियों के चलते जन चर्चा में आ गया। इस जन चर्चा के परिणाम स्वरूप देश-विदेश के निवेशक इस घराने की कंपनियों में निवेश करने लग गये। इसकी गति से प्रभावित होकर कुछ लोग इसकी सफलता के रहस्य को भी समझने में लग गये।

इसी खोज के परिणाम स्वरूप एक रिसर्च संस्था हिन्डंबर्ग की रिपोर्ट सामने आ गयी। इस रिपोर्ट ने यह खुलासा किया कि इस घराने में कई फर्जी विदेशी कंपनियों का हजारों करोड़ का निवेश है। यह कंपनियां और इनके संचालक धरातल पर मौजूद ही नही है। इनके मुख्यालय ''टैक्स हैवन'' देशों में स्थित हैं। इस घराने ने अपनी कंपनियों के शेयरों में फर्जी उछाल दिखाकर देश-विदेश के शेयर बाजार को प्रभावित किया है। यह खुलासा भी सामने आ गया कि इस धन्धे में इसके अपने परिजनों की भी सक्रिय भागीदारी है। यह पहले से ही सार्वजनिक संज्ञान में था कि 2014 के लोकसभा चुनावों में प्रचार के लिए नरेन्द्र मोदी ने गौतम अदानी के ही हेलिकॉप्टर का इस्तेमाल किया है। सरकार बनने के बाद गौतम अदानी प्रधानमंत्री के हेलीकॉप्टर में साथ रहते आये हैं। इस आश्य के फोटोग्राफ तक संसद में विपक्ष दिखा चुका है। प्रधानमंत्री के विदेशी दौरों में अकसर अदानी का साथ रहना या बाद में अदानी का उन देशों में जाना संसद में चर्चा और सवालों का विषय रहा है। सिंगापुर और बांग्लादेश में प्रधानमंत्री की सिफारिशों के बाद अदानी को ठेके मिलना सब आरोपों का विषय रहा है। लेकिन प्रधानमंत्री ने संसद में इन सवालों का जवाब नही दिया है। बल्कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा लोकसभा में पूछे गये अठारह सवालों को उनके भाषण में ही हटा दिया गया है। हिन्डंबर्ग की रिपोर्ट को देश के खिलाफ साजिश करार दिया जा रहा है। नरेन्द्र मोदी ने इस सारी बहस का रुख बदलते हुये ''एकअकेला सब पर भारी'' करार दिया है

इस परिदृश्य में अब यह प्रकरण सर्वोच्च न्यायालय में भी पहुंच गया है। सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा है कि निवेशकों के निवेश की सुरक्षा के क्या उपाय हैं। आरबीआई और सैबी से भी जवाब मांगा है क्योंकि सारी निगरानी एजैन्सियां अब तक खामोश बैठी हैं। जबकि अदानी समूह के शेयर लगातार गिरते जा रहे हैं। विदेशी निवेशक अपना निवेश निकाल रहे हैं। विदेशी बैंकों ने अदानी के शेयरों को बॉण्डज् के तौर पर लेने से मना कर दिया है। देश में भी एल.आई.सी., एस.बी.आई. और पी.एन.बी. सब नुकसान के दायरे में हैं। रिपोर्टों के मुताबिक दस लाख करोड़ का नुकसान हो चुका है। इन सब प्रतिष्ठानों में देश के आम आदमी का पैसा जमा है और इस पैसे का एक बड़ा हिस्सा अदानी समूह में निवेशित है जिसके शेयर लगातार गिर रहे हैं। तो क्या आम आदमी इस पर चिंतित नहीं होगा। सरकारी बैंक अदानी को ढाई लाख करोड़ का कर्ज दे चुके हैं। सरकार चौरासी हजार करोड़ का कर्ज माफ कर चुकी है। देश का यह सबसे अमीर आदमी टैक्स देने वाले पहले पन्द्रह की सूची में भी नहीं है। यह आरोप संसद में लग चुका है। अदानी पर उठते सवालों से प्रधानमंत्री और सरकार लगातार बचते फिर रहे हैं। ऐसे में क्या इस स्थिति को लोकतंत्र के लिये घातक नहीं माना जाना चाहिये? क्या सरकार का रुख एक और जन आन्दोलन की जमीन तैयार नहीं कर रहा है?

अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करनी है तो पसमांदा मुसलमानों को अवसर का लाभ उठाना चाहिए

गौतम चौधरी

भारतीय समाज की सबसे बड़ी खासियत जाति प्रबंधन है लेकिन कई बार इस प्रबंधन का दुष्परिणाम भी देश को भुगतना पड़ा है। किसी समय जाति व्यवस्था कर्मों के आधार पर बनाई गयी होगी लेकिन बाद में यह जन्म आधारित हो गयी। हमारे देश में आक्रांता आते गए और इस जाति के कुप्रबंधन को उन्होंने अपने हथियार के रूप में प्रयोग भी किया बावजूद इसके जाति का जकरण समाप्त न होकर वह न केवल नये रूप और रंग में प्रस्तुत हुआ अपितु और मजबूत होकर भी उभरा। इसलिए भारत में यह कहावत प्रचलित हो गयी कि भले आप अपना धर्म बदल लें लेकिन आपकी जाति वही रहेगी। भारतीय उपमहाद्वीप की जाति व्यवस्था बेहद नंगा और प्रभावशाली है। भारत में जब मुसलमानों का आगमन हुआ तो हिन्दुओं में कथित उच्च कही जाने वाली जाति से प्रताड़ित कुछ कमजोर जाति के लोगों ने इस्लाम कबूल कर लिया लेकिन वहां भी वे वही रहे। ब्राह्मण यदि मुसलमान हुआ तो उसे शेख और सैयद का तगमा मिला लेकिन जुलाहे को वहां भी जुलाहा ही माना गया। जो दलित थे उसे दलित ही रहने दिया गया। ऐसा केवल मुसलमानों में ही नहीं, ईसाइयों में भी है। इस प्रकार आज भारतीय उपमहाद्वीप में बड़ी संख्या ऐसे मुसलमानों की है जो पिछड़े और कमजोर हैं। इसे पसमांदा के नाम से जाना जाता है। मुसलमानों का उच्च वर्ग शेख, सैयद और पठान हैं। इन्हें अशराफ कहा जाता है और बिरादरी में इनकी अहमियत है। सारे मुस्लिम संस्थाओं में अशराफ भरे पड़े हैं।

अब पसमांदा मुसलमानों में जागृति आयी है। पसमांदा अब अपने हक की बात करने लगे हैं। अन्य सरकारों ने भी मुसलमानों के इस वर्ग पर ध्यान दिया लेकिन राजनीतिक कारणों से ही सही वर्तमान नरेंद्र मोदी की सरकार इस पर ज्यादा ध्यान दे रही है। हाल के दिनों में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने पसमांदा मुसलमानों तक पहुंच बनाने की कोशिश की है। सरकार की ओर से ऐसे कई प्रयास हो रहे हैं जिससे यह साफ झलक रहा है कि मोदी सरकार के रणनीतिकार मुसलमानों के बड़े समूह पर केन्द्रित अपनी योजनाओं को आकार दे रहे हैं। इस मौके का फायदा पसमांदा मुसलमानों को उठाना चाहिए और अपने पिछड़ेपन को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। अभी हाल ही में सरकार की ओर से स्नेह यात्रा आयोजित की गयी। यही नहीं सरकार महत्वपूर्ण पदों पर पसमांदा तबके के लोगों की नियुक्ति कर यह संदेश देने में लगी है कि सरकार पिछड़े मुसलमानों को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगी है। भाजपा ने इस दिशा में एक बड़ी बहस छेड़ दी है। नि:संदेह यह बीजेपी की गंभीर कोशिश है और इस पर अन्य दलों से लेकर मुस्लिम समाज में भी हलचल है। प्रधानमंत्री अपने नारे, ''सबका साथ सबका विकास'' के तहत अब विकास पर केंद्रित एक नए तरीके का वोट बैंक तैयार करने लगे हैं। इस वोट बैंक में पसमांदाओं की अहम भूमिका दिख रही है।

मुसलमानों का अशराफ तबका यानी कुलीन वर्ग सदा से पसमांदाओं पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके रखे हुए हैं। यह ठीक उसी तरह है जिस तरह हिन्दुओं में ब्राह्मण या क्षत्रियों का है। अशराफ ये नारा देते हैं कि इस्लाम में जातिवाद नहीं है किन्तु भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना के तहत मुस्लिम समाज में भी जाति व्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। पसमांदा की अनुमानित संख्या का एक बड़ा हिस्सा जैसे-नाई, कुंहार, बुनकर आदि अन्य पिछड़ा वर्ग में समाहित है। पसमांदा कोई एक खास जाति ना होकर, एक ऐसा समूह है जिसका वर्गिकरण पिछड़ेपन के आधार पर किया जा सकता है। मुसलमानों में अशराफ वर्ग हमेशा से कभी बाबरी मस्जिद के नाम पर तो कभी मुस्लिम प्रश्नल लॉ बोर्ड ने नाम पर पूरे समाज को भड़काता रहा है और धार्मिक मुद्दों पर अधिक बल देता रहा है लेकिन पसमांदा के मुख्य सवाल रोजी-रोटी, शिक्षा और धार्मिक संगठनों में प्रतिनिधित्व कभी नहीं दिया। मुसलमानों के इसी कमजोर नब्ज को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पकड़ ली है। पसमांदा को लेकर उन्होंने एक पहल शुरू की है। अब इस वर्ग के मुसलमान मोदी और भाजपा के साथ जुड़ने लगे हैं। साथ ही पसमांदा मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे राजनीतिक रूप से समुचित भागीदारी और उनके आर्थिक सशक्तिकरण के मुद्दों का भी हल भाजपा ढूंढने लगी है।

कुछ अशराफ संगठन और नेता पसमांदा समाज के दलित के आरक्षण के लिए आर्टिकल 341 पैरा तीन का राग अलाप रहे हैं। इस मुद्दे को उभार कर वे एक बार फिर से हिन्दू-मुस्लिम यानी साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के प्रयास कर रहे हैं लेकिन अशराफों के मन में पसमांदाओं के प्रति थोड़ा भी प्रेम है तो वे उन्हें धार्मिक संगठनों में बराबर की हिस्सेदारी क्यों नहीं सौंपते हैं? सच तो यह है कि ऐसा कर अशराफ एक तीर से दो शिकार करना चाहते हैं। पहला सांप्रदायिक माहौल बनाकर पहले से पिछड़े पसमांदा पर वर्चस्व को और मजबूत करना और दूसरा उन्हें भीड़ बना सरकार पर दबाव डाल अपनी सत्ता एवं वर्चस्व को बनाये व बचाये रखना। अगर इसे न रोका गया तो पसमांदा आन्दोलन कमजोर पड़ जायेगा और प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा जो अवसर प्रदान किए जा रहे हैं उससे मुसलमानों का एक बड़ा तबता बंचित रह जाएगा। दंगों में गरीब मारे जाते हैं। अशराफ मुसलमान कम ही दंगों का शिकार होते हैं। दंगों में सबसे ज्यादा हानि पसमांदाओं की होती है। पसमांदा मुसलमानों को इस बार अपने निर्णय को लेकर सतर्क होना होगा। आने वाले समय में यदि उन्हें रोजगार और रोटी चाहिए तो अशराफों के बहकावे से उन्हें बचना होगा। पसमांदा मुसलमानों को त्वरित प्रतिक्रिया के बजाए अपनी सामाजिक हिस्सेदारी, आर्थिक सशक्तिकरण और देश के विकास में शैक्षिक भूमिका पर विचार करने की आवश्यकता है। फिलहाल मुसलमानों का नेतृत्व अशराफ वर्ग के हाथ में है। इसमें यदि पसमांदाओं को अपनी हिस्सेदारी चाहिए तो उन्हें अपनी रणनीति खुद तय करनी होगी।

महाशिवरात्रि पर बमबम भोले के उद्घोष से गुंजायमान होती है बैजनाथ घाटी

18 से 22 फरवरी तक मनाया जाएगा पांच दिवसीय राज्य स्तरीय महाशिवरात्रि मेला

शिमला। हिमाचल प्रदेश की कांगड़ा घाटी शक्तिपीठों व प्राचीन शिवालयों के लिए विश्व विख्यात है। जिसमें जहां प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री ज्वालाजी, चामुंडा और ब्रजेश्वरी धाम कांगड़ा के ऐतिहासिक महत्व का धार्मिक ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है वहीं पर कांगड़ा की सुरम्य घाटी में अनेक प्राचीन शिवालय विद्यमान है जिनमें से बैजनाथ स्थित शिवधाम एक हैं जिसके प्रादुर्भाव की कथा दशानन रावण से जुड़ी है। देश विदेश से हर वर्ष लाखों की तादाद में श्रद्धालु व पर्यटक इस घाटी के मंदिरों के दर्शन के अतिरिक्त धौलाधार की हिमाच्छादित पर्वतश्रृंखला की अनुपम छटा का आन्नद लेते हैं। उल्लेखनीय है कि शिवधाम में यूँ तो वर्ष भर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है परंतु विशेषकर शिवरात्रि व सावन महीने में इस मंदिर में विशेष मेलों का आयोजन होता है। जिसमें बम बम भोले के उद्घोष से समूची बैजनाथ घाटी गुंजायमान होती है । बताते हैं कि इस मंदिर में प्राचीन शिवलिंग के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ के समान फल मिलता है ।

जनश्रुति के अनुसार बैजनाथ शिव मंदिर में विशेषकर महाशिवरात्रि पर्व पर दर्शन करने का विशेष महत्व है। शिवरात्रि पर्व पर इस मंदिर में प्रात: से ही भोलेनाथ के दर्शन के लिए हजार लोगों का मेला लगा रहता है। इस दिन मंदिर के बाहर रहने वाली बिनवा खड्ड पर बने खीर गंगा घाट में स्नान का विशेष महत्व है । श्रद्धालु स्नान करने के उपरांत शिवलिंग

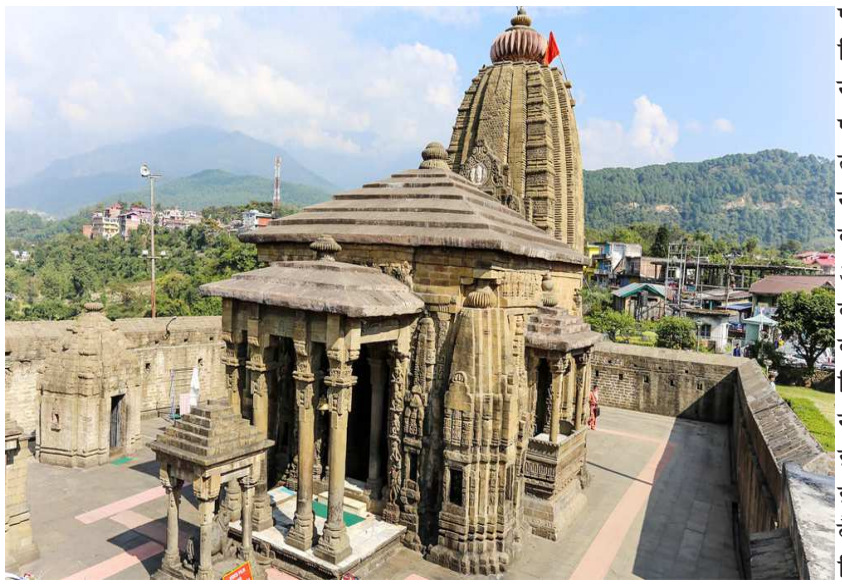

को पंचामृत से स्नान करवा कर उस पर बेलपत्र, फूल भांग, धतूरा इत्यादि अर्पित कर भोले बाबा को प्रसन्न करके अपने कष्टों का निवारण करते हैं । पौराणिक कथा के अनुसार त्रेतायुग में लंका के राजा रावण ने कैलाश पर्वत पर भगवान शिव की तपस्या की थी। कोई फल न मिलने पर दशानन ने घोर तपस्या प्रारंभ की तथा अपना एक एक सिर काट कर हवन कुंड में आहुति देकर शिव को अर्पित करना शुरू कर दिया। दसवां और अंतिम सिर कट जाने से पहले शिव जी ने प्रसन्न होकर रावण का हाथ पकड़ लिया उसके सभी सिरों को पुनर्स्थापित कर शिव ने रावण को वर मांगने को कहा। रावण ने अपनी इच्छा प्रकट करते हुए कहा कि वह कैलाशपति को शिवलिंग के रूप को लंका में स्थापित करना चाहता है । शिवजी ने तथास्तु कहकर लुप्त हो गये । लुप्त होने के पहले शिव ने अपनी शिवलिंग स्वरूप चिन्ह रावण को देने से पहले शर्त रखी कि वह इन शिवलिंगों को पृथ्वी पर न रखे। रावण दोनों शिवलिंग लेकर चला गया। रास्ते में गोकर्ण क्षेत्र बैजनाथ पहुंचने पर रावण को लघुशंका का आभास हुआ। रावण ने बैजू नाम के गवले को शिवलिंग पकड़ा दिया और स्वयं लघुशंका निवारण के लिए चला गया। शिवजी की माया के कारण बैजू शिवलिंग के अधिक भार नहीं सहन सका और उसने इसे धरती पर रख दिया। इस तरह दोनों शिवलिंग बैजनाथ में स्थापित हो गए। जिस मंजूशा में रावण ने दोनों शिवलिंग रखे थे उस मंजूशा के सामने जो शिवलिंग था वह चंद्रताल के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जो पीठ की ओर था वह बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मंदिर के सामने कुछ छोटे मंदिर हैं। नंदी बैल की मूर्ति है। जहां पर भक्तगण नंदी के कान में अपनी मनौती पूरी होने की कामना हैं । गौर रहे कि यह शिवधाम अत्यंत आकर्षक सरंचना व निर्माण कला के उत्कृष्ट नमूने के रूप में विद्यमान है। इस मंदिर के गर्भ गृह में प्रवेश एक डयोढ़ी से होता है। जिसके सामने का बड़ा वर्गाकार मंड़प बना हुआ है और उत्तर व दक्षिण दोनों तरफ बड़े छज्जे बने हैं। मंडप के अग्रभाग में चार स्तंभों पर टिका एक छोटा बरामदा है । बहुत सारे चित्र दीवार में नक्काशी करके बनाये गये हैं। मंदिर परिसर में प्रमुख मंदिर के अलावा कई और भी छोटे-छोटे मंदिर हैं जिनमें भगवान गणेश, माँ दुर्गा, राधाकृष्ण व भैरव की प्रतिमायें विराजमान हैं।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैजनाथ में महाशिवरात्रि पर पांच दिवसीय राज्य स्तरीय मेला 18 से 22 फरवरी 2023 तक पारंपरिक ढंग से मनाया जाएगा। जिसमें शिवलिंग की पूजा अर्चना तथा शोभा यात्रा के साथ 18 फरवरी को मेला आरंभ होगा। इस पांच दिवसीय मेले में रात्रि को सिनेमा जगत के प्रसिद्ध कलाकारों के अतिरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों से प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा अपनी सुरीली आवाज का जादू बिखेरा जाएगा। कमेटी द्वारा मेले में विशाल दंगल का आयोजन भी किया जाएगा जिसमें उत्तरी भारत के जाने माने पहलवान भाग लेंगे।

पैराग्लाइडिंग ने बदली बीड़-बिलिंग की तकदीर

हजारों लोगों के लिए खुले स्वरोजगार के द्वार

अनील धीमान
(सहायक लोक सम्पर्क अधिकारी पालमपुर)

शिमला। जिला कांगड़ा का बीड़-बिलिंग घाटी ऐसा क्षेत्र है जिसकी तकदीर और तस्वीर पैराग्लाइडिंग से बदली है। बीड़-बिलिंग के युवाओं ने पैराग्लाइडिंग को ही रोजगार के रूप में अपनाकर उदाहरण प्रस्तुत किया है। आसमान को मानवपरिंदों से गुलजार रखने वाले इस क्षेत्र के लगभग हर घर से पैराग्लाइडर पायलट है। बीड़-बिलिंग पैराग्लाइडिंग के लिये विश्व में दूसरी और एशिया में पहली बेहतरीन स्थली, दुनिया भर के पैराग्लाइडिंग के शौकिनों का पसंदीदा स्थान है। दुनिया भर से लोग यहां पैराग्लाइडिंग करने के लिये यहां आते हैं। यहां के युवा पैराग्लाइडिंग केवल रोजगार के लिए नहीं करवाते बल्कि ज्योति ठाकुर, अरविंद, प्रकाश, मंजीत, कमल, सुरेश जैसे दर्जनों होनहार पैराग्लाइडर्स ने चीन, नेपाल, बुलगारिया, जापान इत्यादि देशों में भारत का प्रतिनिधित्व कर प्रदेश का नाम भी रोशन किया है।

धौलाधार पर्वत के श्रृंखला के आंचल में बीड-बिलिंग घाटी, नैसर्गिक सौंदर्य, चाय के बागानों, पहाड़ी तथा तिब्बती संस्कृति के समावेश की अनोखी झलक और पैराग्लाइडिंग के लिए विख्यात होने के कारण अंतराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर विशेष पहचान रखती है। प्रति वर्ष लाखों देशी-विदेशी पर्यटकों की आवाजाही से बैजनाथ उपमण्डल का छोटा सा गांव अब शहर में तबदील हो गया है। बीड़-बिलिंग घाटी में लगभग 500 से 600 युवा लाईसेंस होल्डर पैराग्लाइडिंग पायलट हैं, जो

प्रतिदन पर्यटकों को टेंडम प्लाईटस करवाकर अपनी रोजी-रोटी चला रहे हैं। बीड-बिलिंग के युवाओं के अतिरिक्त यहां की युवतियां भी कई बार मानवपरिंदों के रूप में धौलाधार की पहाड़ियों को नाप चुकी हैं।

बीड़-बिलिंग घाटी में देश-विदेश के लोगों का पैराग्लाइडिंग सिखाने का कार्य भी हो रहा है। हजारों लोग टैक्सी, फोटाग्राफी, होटल, रेस्टोरेंट, टैंट, ढाबा, ट्रैवलिंग एजेंसी और अन्य व्यवसाय से अच्छा-खासी कमाई कर रहे हैं।

समुंद्र तल से लगभग 2290 मीटर की उंचाई पर स्थित बिलिंग की खोज इजरायली पायलट ने की थी। वर्ष 1982 में हैंगग्लाइडिंग के रूप में आरंभ यह खेल समय के साथ-साथ पैराग्लाइडिंग में परिवर्तित हुआ और पूरे क्षेत्र की खुशहाली और उन्नती का माध्यम बना और लोग आर्थिक रूप में सुदृढ़ होकर अब रोजगार देने की स्थिती में हैं।

प्रदेश सरकार ने बीड-बिलिंग घाटी में साहासिक खेलों को बढ़ावा देने के लिए पैराग्लाइडिंग आरंभ करवाई। यहां पैराग्लाइडिंग को बढ़ावा देने के लिए समय-समय राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के आयोजन से दुनियां भर से पैराग्लाइडिंग के शौकिन और पर्यटक यहां आने लगे। सरकार ने पैराग्लाइडिंग और साहासिक खेलों के लिए करोड़ों रुपये व्यय कर मूलभूत सुविधाओं का सृजन किया है। पैराग्लाइडिंग में किसी प्रकार से कोई असुविधा नहीं हो, बीड़ में लगभग 68 कनाल भूमि का अधिग्रहण लैंडिंग के लिये किया है। इस क्षेत्र को विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण (साडा) के अंतर्गत लाकर इस क्षेत्र में बिना अनुमति निर्माण पर पूर्ण प्रतिबंध है।

मुख्य संसदीय सचिव एवं बैजनाथ के विधायक किशोरी लाल ने कहा कि पैराग्लाडिंग से बैजनाथ क्षेत्र को विश्व में पहचान मिली है। यहां खिलाड़ियों और पर्यटकों को और अधिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए सरकार प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि पैराग्लाडिंग से इस क्षेत्र का तेजी से विकास हुआ है और लोग आर्थिक रूप में सुदृढ़ हुये हैं। उन्होंने बताया कि विधायक प्राथमिकता बैठक में बिलिंग तक रोप-वे निर्माण का प्रस्ताव दिया गया है। विशेषज्ञों की राय के उपरांत अगर संभव हुआ तथा पैराग्लाडिंग के लिए कोई बाधा उत्पन्न नहीं हुई तो रोप-वे लगवाने का भी प्रयास किया जायेगा ताकि साहसिक खेलों के अतिरिक्त पर्यटन को और बढ़ावा मिले।

मुख्यमंत्री का केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी से आग्रह फोरलेन परियोजनाओं के निर्माण कार्यों को गति प्रदान की जाए

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से भेंट की और

प्रदेश से संबंधित विभिन्न मामलों विशेषकर भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा कार्यान्वित की जा रही फोरलेन परियोजनाओं और अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी।

मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय मंत्री से आग्रह किया कि प्रदेश की फोरलेन परियोजनाओं विशेषकर कीरतपुर-मनाली, परवाणू-शिमला, चक्की-मटौर-शिमला, मण्डी-पठानकोट, नालागढ़-स्वारघाट, मुबारकपुर-अम्ब-नादौन और पावंटा साहिब -कालाअम्ब राजमार्ग के निर्माण कार्यों को गति प्रदान की जाए ताकि इनका कार्य समयबद्ध पूर्ण हो सके। उन्होंने टू-लेन हाईवे को फोरलेन में स्तरोन्नत करने और राष्ट्रीय राजमार्गों में टनल निर्मित करने के संबंध में भी चर्चा की।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश में सुचारू यातायात तथा यात्रियों की सुविधा के लिए फ्लाईओवर निर्माण तथा पर्वतमाला परियोजना के अन्तर्गत प्रदेश में प्रस्तावित रोपवे के निर्माण का भी आग्रह किया।

मुख्यमंत्री ने राज्य में आगामी पर्यटन सीजन के दृष्टिगत राष्ट्रीय राजमार्गों के मुरम्मत कार्य के लिए धनराशि जारी करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में अधिकतर पर्यटक सड़क मार्गों से आते हैं और इसे ध्यान में रखते हुए सड़क मार्गों को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त प्रदेश में कार्यान्वित की जा रहीं केंद्र की ओर से वित्तपोषित परियोजनाओं के संबंध में भी विस्तार से चर्चा की गयी। उन्होंने अन्तरराज्यीय संपर्क सुविधा के उन्नयन पर भी बल दिया और केन्द्रीय मंत्री ने इस पर अपनी सैद्धान्तिक सहमति प्रदान की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के संबंध में उठाये गये विभिन्न मामलों पर केंद्रीय मंत्री द्वारा हरसंभव सहायता और सहयोग के लिए आश्वासन प्रदान किया गया है। मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री से पहाड़ी राज्य के प्रति उदारतापूर्ण रवैये के लिए आभार व्यक्त किया और उन्हें हिमाचल आने के लिये आमंत्रित किया।

लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, मुख्य संसदीय सचिव सुंदर सिंह ठाकुर, संजय अवस्थी, प्रदेश पर्यटन विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष आरएस बाली तथा विधायक केवल सिंह पठानिया इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ उपस्थित थे।

ग्रीन हाईड्रोजन, टनल, दुग्ध उत्पादन तथा मल निकासी क्षेत्रों में सहयोग करेगा जाइका:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में जापान इंटरनेशनल कारपोरेशन एजेंसी (जाइका) के साथ आयोजित बैठक में कहा कि एजेंसी हिमाचल प्रदेश में ग्रीन हाईड्रोजन, टनल, दुग्ध उत्पादन तथा मल निकासी क्षेत्रों के लिए समर्थन तथा आवश्यक राशि उपलब्ध करवाएगी।

इस संबंध में शिमला में भी शीघ्र

ही एक विस्तृत बैठक आयोजित की जाएगी। मुख्यमंत्री ने जाइका को विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा ताकि इस दिशा में कार्य योजना तैयार की जा सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल जैसे पहाड़ी राज्य में छोटी सुरंगें सम्पर्क सुविधा प्रदान करने के साथ-साथ यात्रा के समय को कम करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने जाइका से प्रदेश में सुरंग निर्माण को भी अपनी परियोजनाओं में शामिल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन तीसरा ऐसा क्षेत्र है, जिसमें जाइका अपना सहयोग एवं तकनीक उपलब्ध करवा सकती है। इससे प्रदेश और विशेष तौर पर किसानों की आर्थिकी में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि सामुदायिक मल निकासी तथा स्वच्छता भी प्रदेश सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने हिमाचल को वर्ष 2025 तक हरित उर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। परिवहन विभाग के वाहनों को इलेक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तित कर इस दिशा में कार्य आरम्भ कर दिया गया है। प्रदेश में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ग्रीन हाईड्रोजन प्लांट स्थापित करने पर भी सरकार विचार कर रही है। यह महत्वकांक्षी परियोजना हरित ऊर्जा राज्य का लक्ष्य हासिल करने में मील पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि इसके लिए इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन से भी विचार-विमर्श किया जा रहा है।

जाइका के मुख्य प्रतिनिधि सैतो मीतसूनौरी ने मुख्यमंत्री को आश्वासन दिया कि एजेंसी प्रदेश सरकार की आंकाक्षाओं के अनुरूप परियोजनाओं का कार्य करेगी।

मुख्यमंत्री ने जल विद्युत परियोजनाओं में प्रदेश की हिस्सेदारी 12 से बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का आग्रह किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने केंद्रीय विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर.के. सिंह के साथ बैठक की। उन्होंने केंद्रीय मंत्री से 25 वर्ष पहले शुरू की

गयी ऊर्जा परियोजनाओं में राज्य की हिस्सेदारी बढ़ाने का आग्रह किया, जिनकी ;ण अदायगी पूरी कर ली गय्र है। उन्होंने कहा कि इनमें राज्य की हिस्सेदारी 12 से बढ़ाकर 15 प्रतिशत की जानी चाहिए।

मुख्यमंत्रे ने केन्द्रीय मंत्रे को अवगत कराया कि प्रदेश की जलविद्युत क्षमता के लगभग 12000 मेगावाट का अभी दोहन किया जाना शेष है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सु ढ़ करने में जल विद्युत विकास महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से प्रदेश में प्रत्यक्ष रूप से राजस्व सृजन के साथ-साथ रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त, प्रदेश में सौर ऊर्जा दोहन की अपार संभावनाएं हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में निवेश को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए उद्यमियों को निवेश हितैषी तंत्र प्रदान किया जाएगा ताकि वे अविलंब अपनी परियोजनाएं स्थापित कर सकें। राज्य सरकार द्वारा निवेशकों के लिए नियमों और प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है और उपायुक्तों को अनुमति देने का अधिकार प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विशेष रूप से ऊर्जा और पर्यटन के क्षेत्र में समयबद्ध ढंग से सभी आवश्यक अनुमतियां देने के लिए प्रतिबद्ध है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ऊर्जा परियोजनाओं से विभिन्न स्तरों पर समझौता करने पर विचार कर रही है। पहले स्तर पर ऋण अदायगी की अवधि तक के लिए और दूसरा स्तर जलविद्युत परियोजना के हिस्से पर ऋण अदायगी की समाप्ति के बाद का होगा।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय मंत्री के साथ सतलुज जल विद्युत निगम (एसजेवीएन) द्वारा कार्यान्वित की जा रही लुहरी विद्युत परियोजना का मामला भी उठाया और परियोजना की व्यवहारिकता को देखते हुए राज्य की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए सहमति प्रदान करने का भी आग्रह किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने भाखड़ा ब्यास प्रबन्धन बोर्ड (बीबीएमबी) द्वारा हिस्सेदारी एवं बकाया भुगतान के संबंध में राज्य सरकार के पक्ष में निर्णय दिया है। उन्होंने कहा कि बीबीएमबी को बकाया राशि का तत्काल भुगतान करने के निर्देश दिए जाने चाहिए।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि शानन परियोजना की लीज अवधि समाप्त हो चुकी है और इसे आगे के निष्पादन के लिए राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहित किया जाएगा

उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री ने लेह की तर्ज पर राज्य के स्पिति क्षेत्र में हरित ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य में इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ई-चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे ताकि वर्ष 2025 तक हरित ऊर्जा राज्य का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके। ई-चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए राज्य सरकार भूमि एवं बिजली उपलब्ध करवाएगी।

हरित ऊर्जा ले जाने के लिए ट्रांसमिशन लाइन की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट भी तैयार की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश देश का एकमात्र ऊर्जा सरप्लस राज्य है और प्रदेश में ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन की दिशा में भी कार्य किया जा रहा है। राज्य ऊर्जा परियोजना को राजस्व हिस्सेदारी के आधार पर कार्यान्वित करेगा।

इस अवसर पर मुख्यमत्रे ने केन्द्रीय मंत्री को सम्मानित किया और उन्हें हिमाचल प्रदेश आने के लिए आमंत्रित भी किया।

बैठक में मुख्य संसदीय सचिव सुंदर सिंह ठाकुर और संजय अवस्थी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव भरत खेड़ा, आवासीय आयुक्त मीरा मोहंती और मुख्यमंत्री के प्रधान निजी सचिव विवेक भाटिया भी उपस्थित थे।

खेलो इंडिया गेम्स में शामिल हुए युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री विक्रमादित्य सिंह

शिमला/शैल। लोक निर्माण, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री विक्रमादित्य सिंह मध्य प्रदेश के भोपाल में आयोजित

'खेलो इंडिया गेम्स' में शामिल हुए। उन्होंने इन खेलों में भाग ले रहे हिमाचल प्रदेश के खिलाड़ियों से भेंट की और उनका उत्साहवर्द्धन किया।

खेल मंत्री ने मध्य प्रदेश में खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बॉक्सिंग रिंग, शूटिंग रेंज और जिम सहित खेलों से संबंधित अन्य आधारभूत संरचना का अवलोकन भी किया।

इस अवसर पर विक्रमादित्य सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए ठोस कदम उठा रही है। हिमाचल के युवाओं को बेहतर खेल ढांचा एवं अन्य आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए राज्य सरकार कृतसंकल्प है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश के खेल म डल का अध्ययन करने तथा यहां उपलब्ध उन्नत उपकरणों व खेल अधोसंरचना के बारे में चर्चा के लिए अधिकारियों को हिमाचल आने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि 'खेलो इंडिया गेम्स' के अंर्तगत केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली निधि से हिमाचल प्रदेश में भी खेलों के विकास के लिए प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को विभिन्न खेल गतिविधियों से जोड़ते हुए उन्हें बेहतर सुविधाएं एवं उपकरण इत्यादि उपलब्ध करवाकर उनकी प्रतिभा में और निखार लाने के लिए विशेष कदम उठा रही है।

इस अवसर पर युवा सेवाएं एवं खेल निदेशक राजीव शर्मा भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने दिल्ली में हिमाचल निकेतन का शिलान्यास किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने दिल्ली के द्वारिका क्षेत्र में 57.72 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले पांच

मंजिला हिमाचल निकेतन का शिलान्यास किया। इस भवन के निर्माण से दिल्ली जाने वाले हिमाचल के विद्यार्थियों और अन्य लोगों को ठहरने की सुविधाएं उपलब्ध होगी।

इस भवन में दो वीआईपी कमरे, विद्यार्थियों के लिए सभी सुविधाओं से सुसज्जित 36 तथा 40 सामान्य कमरों की सुविधा होगी। इसके अतिरिक्त स्टॉफ के लिए तीन कमरों की सराय (डोरमैट्रिज) की सुविधा होगी। इस भवन के बेसमेंट में 53 वाहनों और 87 दोपहिया वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा भी होगी। इस भवन में कुल 81 कमरे होंगे।

इस अवसर पर हिमाचल वासियों को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल भवन और हिमाचल सदन के अतिरिक्त अब इस भवन के निर्माण से दिल्ली में आयोजित होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग लेने वाले हिमाचली विद्यार्थियों को ठहरने की सुविधा प्राप्त होगी। हिमाचल निकेतन विद्यार्थियों को पढ़ने तथा रहने की आरामदायक सुविधा प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में एम्स में चिकित्सा सुविधा के साथ विभिन्न उद्देश्यों के लिए नई दिल्ली जाने वाले प्रदेशवासियों को हिमाचल भवन तथा हिमाचल सदन में रहने की सुविधा उपलब्ध होती है। हिमाचल निकेतन से अब राष्ट्रीय राजधानी में हिमाचलियों को रहने का तीसरा विकल्प उपलब्ध होगा।

मुख्यमंत्री ने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य सुनिश्चित करने के साथ वर्ष 2025 तक इस परियोजना को पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नियमित अंतराल में लोक निर्माण विभाग के मंत्री निर्माणाधीन भवन की समीक्षा भी करेंगे ताकि भवन का समयबद्ध निर्माण सुनिश्चित किया जा सके।

इससे पहले, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने मुख्यमंत्री का स्वागत कर सम्मानित किया और परियोजना का विवरण देते हुए भवन का समयबद्ध निर्माण सुनिश्चित करने के लिए आश्वस्त किया।

दुग्ध संग्रहण के लिए क्लस्टर स्तर पर स्थापित होंगे चिलिंग प्वाइंट्स:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री परषोत्तम रूपाला से भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रदेश में दुग्ध उत्पादन क्षेत्र को राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (एनपीडीडी) के

तहत वृहद स्तर पर सुदृढ़ किया जाएगा ताकि हिमाचल, देश का दुग्ध उत्पादक राज्य बनकर उभरे।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने केंद्रीय मंत्री से राज्य के लिये अभिशीतन, परिवहन और डेयरी उत्पादों से संबंधित एक समग्र डेयरी परियोजना का आग्रह किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि गांवों में दुग्ध एकत्रीकरण के बाद शंकुल (क्लस्टर) स्तर पर चिलिंग प्वाइंट स्थापित किये जायेंगे। इन चिलिंग प्वाइंट्स से प्रशितित (रेफ्जिरेटिड) दुग्ध वाहन के माध्यम से दूध को जिला स्तर पर स्थापित मुख्य संयंत्र तक पहुंचाया जाएगा।

उन्होंने कहा कि अत्याधुनिक तकनीक से विभिन्न दुग्ध उत्पाद तैयार करने पर विशेष बल दिया जाएगा ताकि किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिल सके।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के दुग्ध उत्पादकों सहकारी क्षेत्र के प्रबंधन कौशल की बारीकियां सीखने के लिए गुजरात भ्रमण पर भेजा जाएगा।

केंद्रीय मंत्री ने आश्वस्त करते हुए कहा कि विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्राप्त होने के पश्चात इस परियोजना के लिए धनराशि उपलब्ध करवाई जाएगी।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि प्रदेश की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में पशुपालन और दुग्ध व्यवसाय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय मंत्री के समक्ष पशुधन बीमा योजना के तहत राज्य को लगभग 15 करोड़ रुपये की लंबित राशि जारी करने का मामला भी उठाया।

मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय पर्यटन मंत्री से हिमाचल को धरोहर विकास में शामिल करने का आग्रह किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में केन्द्रीय पर्यटन मंत्री जी. किशन रेड्डी से भेंट की। मुख्यमंत्री ने उन्हें अवगत करवाया कि प्रदेश सरकार पर्यटन विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है और इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए नवीनतम पग उठाये जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के अन्तर्गत कांगड़ा जिला के पौंग और मण्डी जिला के जंजैहली क्षेत्र को पर्यटन की दृष्टि से

विकसित किया जाएगा। इसके लिए केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय से अनुमोदित सलाहकारी संस्था शीघ्र ही अपनी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करेगी। मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय मंत्री से प्रदेश के अन्य पर्यटन स्थलों को भी स्वदेश दर्शन योजना 2.0 के अगले चरण में शामिल करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने कांगड़ा जिला को पर्यटन राजधानी के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है। कांगड़ा जिला में जलाशय, धार्मिक स्थल, साहसिक गतिविधियों के साथ-साथ विहंगम धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं से जुड़े पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं। कांगड़ा जिला में पर्यटन अधोसंरचना का विकास कर इसे संपन्न वर्गों के पसंदीदा पर्यटन गंतव्य के रूप में भी उभारा जाएगा।

उन्होंने कहा कि धौलाधार श्रृंखला में टेंट सिटी निर्मित करने के लिए प्रदेश सरकार एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर पर्यटन मंत्रालय को प्रस्तुत करेगी। राज्य सरकार इसके लिए उपयुक्त भूमि और सड़क सुविधा भी प्रदान करेगी। इस टेंट सिटी की क्षमता 200 से अधिक कमरों की होगी और इसमें उत्तम सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। उन्होंने कहा कि धर्मशाला में प्रस्तावित सम्मेलन केन्द्र का निर्माण एशियन विकास बैंक परियोजना के अन्तर्गत किया जाएगा और यह भी पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में हेलीपोर्ट के निर्माण का निर्णय लिया है ताकि हवाई सेवा के माध्यम से पर्यटन को विस्तृत स्तर पर प्रोत्साहित किया जा सके। उन्होंने कहा कि कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार शीघ्र ही पूर्ण कर लिया जाएगा और इसकी भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'वाइब्रेंट विलेज' योजना के अंतर्गत भी पर्यटन गंतव्य विकसित किए जाएंगे। प्रदेश में 25 ऐसे पर्यटन गंतव्यों को विकसित करने के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार की जाएगी। उन्होंने कहा कि इन स्थलों पर पर्यटकों के लिए विभिन्न प्रकार की अत्याधुनिक सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल को धरोहर विकास में शामिल करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि माता चिंतपूर्णी मंदिर को प्रसाद योजना के अंतर्गत विकसित किया जाएगा। इस योजना के तहत श्रद्धालुओं को सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होंगी।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि इस वर्ष अप्रैल माह में नई दिल्ली में निवेशकों के साथ एक बैठक आयोजित की जाएगी। उन्होंने सुझाव दिया कि हिमाचल में पर्यटन की अपार संभावनाओं, भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया एवं पर्यटन उद्यम स्थापित करने के लिए अन्य आवश्यक औपचारिकताओं को सुगम बनाने संबंधी एक विस्तृत एवं व्यापक प्रेजेंटेशन तैयार की जाए ताकि इस क्षेत्र में अधिक से अधिक निवेश को आकर्षित किया जा सके।

हरित ऊर्जा राज्य बनाने की दिशा में सरकार के बहुआयामी प्रयास

शिमला/शैल। प्रदेश सरकार हिमाचल प्रदेश को वर्ष 2025 तक हरित ऊर्जा राज्य बनाने के लिए दृढ़ता से कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने विश्व बैंक की टीम के साथ प्रदेश के ग्रीन एजेंडा और विश्व बैंक के सहयोग के साथ इस लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में किए जाने वाले उपायों पर विस्तृत चर्चा की है। प्रदेश सरकार कार्बन उत्सर्जन में कमी लाकर प्रदेश को पहला प्रदूषण रहित राज्य बनाने के लिए प्रयासरत है। यह मुख्यमंत्री के प्रयासों से ही संभव हो पाया है कि वर्ल्ड बैंक ने ग्रीन रेसिलिएन्ट इंटिग्रेटिड डवल्पमेंट में रुचि दिखाई है। इसकी अनुमानित लागत 2500 करोड़ रुपये है तथा यह राशि तकनीकी समीक्षा के आधार पर बढ़ाई भी जा सकती है।

प्रदेश सरकार का यह निर्णय राज्य को ग्रीन रेसिलिएन्ट प्रदेश के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रदेश सरकार ने आगामी नौ महीनों में प्रदेश में 200 मेगावाट क्षमता की सोलर पावर परियोजनाओं को स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है और वर्ष 2024 के अंत तक 500 मेगावाट क्षमता के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के लिए प्रदेश में भूमि अधिग्रहण कर लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री ने यह स्पष्ट किया है कि प्रदेश सरकार राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन की तर्ज पर प्रदेश में वृहद् स्तर पर उत्पादन से लेकर उपयोग तक कार्यप्रणाली पर कार्य करने के लिए प्रयासरत है।

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री से केन्द्रीय विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य शीघ्र आरंभ करने का आग्रह:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से भेंट की। मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय विश्वविद्यालय परिसर का निर्माण कार्य शीघ्र आरंभ करने का आग्रह करते हुए कहा कि इसके लिए भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया पहले ही पूरी की जा चुकी है। केंद्रीय मंत्री ने मुख्यमंत्री को आश्वस्त किया कि शीघ्र ही केंद्रीय विश्वविद्यालय की आधारशिला रखकर निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने हिमाचल को केन्द्र से वित्तपोषित योजनाओं में मिलने वाली राशि को बढ़ाने आग्रह किया ताकि प्रदेश में हो रहे विकास को गति प्रदान की जा सके।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के शैक्षणिक अधोसंरचना को सुदृढ़ करने और आवासीय मॉडल विद्यालयों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने का भी आग्रह किया।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

www.shailsamachar.com

सरकारी भवनों के बहुमंजिला निर्माणों को मिली अनुमति से एनजीटी का फैसला फिर आया चर्चा में

शिमला/शैल। सचिव टी.सी. पी. की अध्यक्षता में बनी सुपरवाइजरी कमेटी ने कुछ सरकारी विभागों द्वारा प्रस्तावित बहुमंजिला भवन निर्माणों को अनुमति प्रदान की है। इन निर्माणों में शिमला के परिमहल में स्वस्थ्य विभाग का सात मंजिला भवन, छोटा शिमला में सूचना आयोग का दो मंजिला भवन, नगर निगम शिमला का बुक कैफे, कृष्णा नगर में नगर निगम के दो मंजिला भवन जिसकी तीसरी मंजिल पर पार्किंग होगी, विश्वविद्यालय का पांच मंजिला आवासीय भवन, आई.जी. एम.सी. का नया ओ.पी.डी. भवन और सात मंजिला पार्किंग शामिल हैं। इनके अतिरिक्त नगर निगम आयुक्त की अध्यक्षता में बनी हाउसिंग कमेटी ने भी 27 निर्माणों के नक्शे पास किये हैं। जिनमें 17 नये नक्शे शामिल हैं। यह नक्शे पास किये जाने के बाद एन.जी. टी. के नवम्बर 2017 में दिये गये फैसलों पर नये सिरे से चर्चाएं चल पड़ी हैं। स्मरणीय है कि प्रदेश के नगर निगम और नगर पालिका क्षेत्रों में भवन निर्माण के नक्शे पास करने का अधिकार इन निकायों के पास है। अन्य क्षेत्रों में जो प्लानिंग में आ चुके हैं वहां पर यह अधिकार टी.सी.पी. के पास हैं। प्रदेश का नगर और ग्रामीण नियोजन – टी.सी. पी. विभाग 1977 में सृजित हुआ था। 1980 में इसके तहत अंतरिम प्लान बनी थी। एन.जी.टी. ने 2017 के फैसले में प्रदेश सरकार द्वारा इतने लम्बे समय तक कोई स्थायी प्लान न बना पाने के लिये कड़ी निन्दा की है और यह स्थायी प्लान तुरन्त प्रभाव से तैयार करने के निर्देश दिये थे। इन निर्देशों के अनुपालन में जयराम सरकार के कार्यकाल में एक प्लान तैयार किया गया था। लेकिन यह प्लान एन.जी.टी. के निर्देशों के अनुसार न होने के कारण अदालत ने रद्द कर दिया था।

हिमाचल भूकंप जोन चार और पांच में आता है। प्रदेश के शिमला, मनाली, कुल्लू, धर्मशाला और कसौली आदि ऐसे क्षेत्र हैं। जिनमें उनकी भार वहन क्षमता से अधिक निर्माण हो रखे हैं। शिमला को लेकर तो सरकार के अपने अध्ययन के ही अनुसार यहां पर भूकंप के एक झटके से करीब चालीस हजार लोगों की मौत होगी और 70% से अधिक निर्माण धवस्त हो जायेंगे। 1971 में किन्नौर में आये भूकंप के कारण शिमला का रिज और लक्कड़ बाजार एरिया आज तक संभल नहीं पाया है। आपदा प्रबंधन के आंकड़ों के अनुसार पिछले करीब दो वर्षों से हर रोज प्रदेश में कहीं न कहीं भूकंप के झटके आ रहे हैं। पिछले दिनों जिस तरह से जोशीमठ के धंसने के समाचार आये हैं उसी तर्ज पर हिमाचल में भी कई क्षेत्रों को लेकर इस तरह की आशंकाएं व्यक्त की जाने लगी है। इस परिदृश्य में एनजीटी के फैसले और उसके निर्देशों की अनुपालना को लेकर चर्चाएं उठना स्वभाविक है। एन.जी.टी. ने शिमला में अढ़ाई मंजिलों से अधिक

✔ क्या जोशी मठ त्रासदी का सरकार पर कोई असर नहीं है

के निर्माण पर रोक लगा रखी है। सरकार द्वारा तैयार किया गया प्लान भी एनजीटी ने इसी कारण से अप्रूव नहीं किया क्योंकि उसमें अदालत के निर्देशों को नजरअंदाज किया गया था। एन. जी.टी. ने तो शिमला से कार्यालयों को बाहर ले जाने तक की सिफारिश कर रखी है। लेकिन सरकार एन.जी.टी. की सिफारिशों के प्रति कितनी गंभीर है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है की फैसले बाद भी पच्चीस हजार से अधिक निर्माण शिमला में होने की चर्चाएं हैं जिनके कोई नक्शे पास नहीं है। वोट की राजनीति के चलते हर तरह के अवैधताएं हो रही हैं और सरकार आंखें बन्द करके बैठी हुई है।

एन.जी.टी. ने सचिवालय में लिफ्ट लगाने की अनुमति नहीं दी है। ओक ओवर में हुआ निर्माण भी फैसले के बाद हुआ है। यहां तक प्रदेश उच्च न्यायालय को भी पुराना भवन गिराकर नया बनाने की अनुमति नहीं मिली है। उच्च न्यायालय ने एन.जी.टी. के आदेशों को स्वीकार कर लिया है। लेकिन सरकार वोटों की राजनीति के कारण एन.जी. टी. आदेशों की अवहेलना करने का कोई अवसर नहीं छोड़ रही है। अब जिन निर्माणों की स्वीकृतियां सुपरवाइजरी कमेटी ने दी हैं क्या वह एन.जी.टी. के मानकों के अनुरूप है या नहीं इस पर चर्चा चल पड़ी है क्योंकि जोशीमठ त्रासदी के बाद आम आदमी इस दिशा में चिन्ता व्यक्त करने लग पड़ा है। क्योंकि एनजीटी का फैसला सरकार की अपनी कमेटी की रिपोर्ट पर आधारित है। यही नहीं फैसला सुनाने से पहले तरुण कपूर कमेटी की सिफारिश पर अदालत ने संबद्ध पक्षों से विस्तृत विचार – विमर्श भी किया था।

अदालत ने साफ कहा है

It also needs to be noticed here that the entire area of Himachal Pradesh particularly the area forming part of the Himalayan including Shimla Dharamshala and Manali fall in seismic zone of IV and V respectively. These are eco-sensitive and ecologically fragile areas with limited resources. They ought not to be subjected to indiscriminate and unsustainable development and should be protected by adopting precautionary principle. The large branch of thisTribunal had the occasion to examine at some length, the consequences of indiscriminate and unsustainable development in Shimla in the case of Yogendra Mohan Sengupta Vs Union of India &ors Original Application No. 121 of 2014 decided on 16th November 2017. Before this judgement was pronounced the Tribunal had appointed a high powered committee of specialized experts from different fields of environment and ecology and that committee had submitted a detailed report dated 24th May, 2017. The committee commented adversely upon indiscriminate unauthorized constructions all over Shimla including the core area and also declared that carrying capacity of Shimla would not permit further constructions particularly which are unauthorized multi-storied and do not adhere to the prescribed norms. The committee also referred to shortage of drinking water and capacity to deal with the municipal solid waste and sewage etc. The recommendations of the committee were accepted by the Tribunal and even the meeting of all stakeholders were held before the judgement was pronounced.

अधिकारी/कर्मचारी पोस्टिंग स्टेशन पर नहीं खरीद सकते संपत्ति

➪ सरकार ने 2016 में दी सुविधा ली वापिस
➪ भ्रष्टाचार रोकने की दिशा में बताया बड़ा कदम
➪ क्या इसी तर्ज पर सरकार स्पष्ट करेगी की धारा 118 के तहत कितनी बार जमीन खरीद की अनुमति मिल सकती है

शिमला/शैल। सरकारी कर्मचारी अधिकारी पोस्टिंग स्टेशन के दायरे में सिर्फ अपने नाम पर या परिजनो के नाम पर संपत्ति नहीं खरीद सकते हैं। यह आदेश 12.01.1996 को जारी हुये थे। इन आदेशों के साथ ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची भी जारी हुई थी और सूचना सभी संबद्ध नियन्ता अधिकारियों को भेजी गई थी। इसके बाद 16.8.1997 और 26. 06.2012 को भी इन्ही आदेशों को दोहराते हुये निर्देश जारी हुये तथा सूची में कुछ छूट गये वर्गों को भी शामिल किया गया। यह सूचना भी ऐसे सारे संबद्ध अधिकारियों को भेजी गयी। लेकिन सरकार के इन आदेशों में सरकार के सचिवालय और विभागों के निदेशालयों में बैठे अधिकारियों/कर्मचारियों को इस प्रतिबन्ध में शामिल नहीं किया गया था। जबकि नगर निकायों तक के अधिकारी कर्मचारी इसमें शामिल थे। सरकार के इन आदेशों का कर्मचारियों/अधिकारियों पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा था और कुछ कर्मचारी संगठनों ने इस पर नाराजगी भी व्यक्त की थी। इस नाराजगी का संज्ञान लेते हुए सरकार ने 15.02.2016 को इस नीति में संशोधन करते हुए नये सिरे से आदेश जारी करते हुए यह सुविधा दे दी कि सरकार की पूर्व अनुमति से संपत्ति खरीदी जा सकती है। इसमें यह शर्त लगा दी कि ऐसी खरीदी हुई संपत्ति का पंजीकरण अधिकारी/कर्मचारी की उस स्टेशन से ट्रांसफर के दो वर्ष बाद होगा। अब सुक्खू सरकार ने 2016 में मिली सुविधा को वापिस ले लिया है। संपत्ति खरीद पर पुन: रोक लग गयी है। सरकार के इस फैसले को भ्रष्टाचार रोकने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है। यहां यह उल्लेखनीय है कि सरकार ने इस संबंध में जारी हुए हर पत्र में यह कहा है कि सरकार के पास उसके आदेशों की अवहेलना की सूचनाएं आ रही हैं। लेकिन आज तक ऐसी अवहेलना के लिये किसी को भी दंडित किये जाने की जानकारी सामने नहीं आयी है। जबकि यह अवहेलना दण्डनीय अपराध घोषित है। ऐसे में अब यह चर्चा चल पड़ी है कि क्या इससे सही में भ्रष्टाचार रुक जायेगा? क्या फील्ड में तैनात कर्मचारी अधिकारी ही भ्रष्टाचार करता है और सचिवालय तथा निदेशालय में बैठे लोग एकदम पाक साफ हैं? यह माना जा रहा है कि जब तक ऐसा प्रतिबंध हर कर्मचारी/अधिकारी पर एक साथ एक जैसा लागू नहीं होगा तब तक इसका कोई अर्थ नहीं होगा। संपत्ति खरीद पर रोक से पहले सरकार को यह विचार करना चाहिये कि एक अधिकारी/ कर्मचारी को राजस्व अधिनियम की धारा 118 के तहत जमीन खरीद की कितनी बार अनुमतियां मिलनी चाहिये। क्योंकि सरकार में ऐसे अधिकारी कर्मचारी हैं जिनके पास प्रदेश के कई स्थानों पर संपत्तियां हैं और वह गैर कृषक और गैर हिमाचली हैं।